रसखान

रसखान के जीवन के संबंध में सही सूचनाएँ प्राप्त नहीं होतीं, परंतु इनके ग्रंथ 'प्रेमवाटिका' (1610 ई०) में यह संकेत मिलता है कि ये दिल्ली के पठान राजवंश में उत्पन्न हुए थे और इनका रचनाकाल जहाँगीर का राज्यकाल था । जब दिल्ली पर मुगलों का आधिपत्य हुआ और पठान वंश पराजित हुआ, तब ये दिल्ली से भाग खड़े हुए और ब्रजभूमि में आकर कृष्णभक्ति में तल्लीन हो गए । इनकी रचना से पता चलता है कि वैष्णव धर्म के बड़े गहन संस्कार इनमें थे । यह भी अनुमान किया जाता है कि ये पहले रसिक प्रेमी रहे होंगे, बाद में अलौकिक प्रेम की ओर आकृष्ट होकर भक्त हो गए । 'दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता' से यह पता चलता है कि गोस्वामी विट्ठलनाथ ने इन्हें 'पुष्टिमार्ग' में दीक्षा दी । इनके दो ग्रंथ मिलते हैं – 'प्रेमवाटिका' और 'सुजान रसखान' । 'प्रेमवाटिका' में प्रेम-निरूपण संबंधी रचनाएँ हैं और 'सुजान रसखान' में कृष्ण की भक्ति संबंधी रचनाएँ ।

रसखान ने कृष्ण का लीलागान पदों में नहीं, सवैयों में किया है । रसखान सवैया छंद में सिद्ध थे । जितने सरस, सहज, प्रवाहमय सवैये रसखान के हैं, उतने शायद ही किसी अन्य हिंदी कवि के हों । रसखान का कोई सवैया ऐसा नहीं मिलता जो उच्च स्तर का न हो । उनके सवैयों की मार्मिकता का आधार दृश्यों और बाह्यांतर स्थितियों की योजना में है । वहीं रसखान के सवैयों के ध्वनि प्रवाह भी अपूर्व माधुरी में है । ब्रजभाषा का ऐसा सहज प्रवाह अन्यत्र दुर्लभ है । रसखान सूफियों का हृदय लेकर कृष्ण की लीला पर काव्य रचते हैं । उनमें उल्लास, मादकता और उत्कटता तीनों का संयोग है । इनकी रचनाओं से मुग्ध होकर भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने कहा था – ''इन मुसलमान हरिजनन पै, कोटिन हिन्दू वारिये ।''

सम्प्रदायमुक्त कृष्ण भक्त कवि रसखान हिंदी के लोकप्रिय जातीय कवि हैं । यहाँ 'रसखान रचनावली' से कुछ छन्द संकलित हैं – दोहे, सोरठा और सवैया । दोहे और सोरठा में राधा-कृष्ण के प्रेममय युगल रूप पर कवि के रसिक हृदय की रीझ व्यक्त होती है और सवैया में कृष्ण और उनके ब्रज पर अपना जीवन सर्वस्व न्योछावर कर देने की भावमयी विदग्धता मुखरित है ।

प्रेम-अयनि श्री राधिका

प्रेम–अयनि श्री राधिका, प्रेम–बरन नँदनंद ।
प्रेम–बाटिका के दोऊ, माली–मालिन–द्वन्द्व ॥
मोहन छबि रसखानि लखि अब दृग अपने नाहिं ।
अँचे आवत धनुस से छूटे सर से जाहिं ॥
मो मन मानिक लै गयो चितै चोर नँदनंद ।
अब बेमन मैं का करूँ परी फेर के फंद ॥
प्रीतम नन्दकिशोर, जा दिन तें नैननि लग्यौ ।
मन पावन चितचोर, पलक ओट नहिं करि सकौं ॥

करील के कुंजन ऊपर वारौं

या लकुटी अरु कामरिया पर राज तिहूँ पुर को तजि डारौं ।
आठहुँ सिद्धि नवोनिधि को सुख नन्द की गाइ चराइ बिसारौं ॥
रसखानि कबौं इन आँखिन सौं ब्रज के बनबाग तड़ाग निहारौं ।
कोटिक रौ कलधौत के धाम करील के कुंजन ऊपर वारौं ॥

बोध और अभ्यास

कविता के साथ

1. कवि ने माली-मालिन किन्हें और क्यों कहा है ?
2. द्वितीय दोहे का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट करें ।
3. कृष्ण को चोर क्यों कहा गया है ? कवि का अभिप्राय स्पष्ट करें ।
4. सवैये में कवि की कैसी आकांक्षा प्रकट होती है ? भावार्थ बताते हुए स्पष्ट करें ।
5. **व्याख्या करें :**

   (क) मन पावन चितचोर, पलक ओट नहिं करि सकौं ।

   (ख) रसखानि कबौं इन आँखिन सौं ब्रज के बनबाग तड़ाग निहारौं ।

कविता के आस-पास

1. हिंदी के मध्ययुगीन प्रमुख मुसलमान कवियों की काल-क्रम से सूची बनाएँ ।
2. रसखान रचनावली पुस्तकालय से उपलब्ध कर उसमें 'प्रेमवाटिका' नामक ग्रंथ के दोहे पढ़कर प्रेम के संबंध में कवि के विचारों पर एक टिप्पणी लिखें ।
3. 'अष्टछाप' क्या है ? उसकी स्थापना किसने की ? अष्टछाप के कवियों की क्रमवार सूची बनाएँ ।

भाषा की बात

1. **समास-निर्देश करते हुए निम्नलिखित पदों के विग्रह करें –**

   प्रेम-अयनि, प्रेमबरन, नँदनंद, प्रेमबाटिक, माली-मालिन, रसखानि, चितचोर, मनमानिक, बेमन, नवोनिधि, आठहुँसिद्धि, बनबाग, तिहूँपुर

2. **निम्नलिखित के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखें –**

   राधिका, नँदनंद, नैन, सर, आँख, कुंज, कलधौत

3. कविता से क्रियारूपों का चयन करते हुए उनके मूल रूप को स्पष्ट करें ।

शब्द निधि

अयनि	:	गृह, खजाना	**कामरिया**	:	कंबल, कंबली
बरन	:	वर्ण, रंग	**तिहूँपुर**	:	तीनों लोक
दृग	:	आँख	**बिसारौं**	:	विस्मृत कर दूँ, भुला दूँ
अँचे	:	खिंचे	**तड़ाग**	:	तालाब
सर	:	बाण	**कोटिक**	:	करोड़ों
मानिक	:	(माणिक्य) रत्न विशेष	**कलधौत**	:	इन्द्र
चितै	:	देखकर	**वारौं**	:	न्योछावर कर दूँ
लकुटी	:	छोटी लाठी	**कुंजन**	:	बगीचा (कुंज का बहुवचन)